Hindi Murli Quiz 07-06-2015

Q.1) **Q .बापदादा ने अपने बच्चों को भिन्न-भिन्न रुहानी अलंकार धारण किये हुए देखा। उन अलंकारों का सही-सही चयन करें---**

A. ☑ छत्रछाया
B. ☑ डबल ताज--एक सम्पूर्ण प्युरिटी के हिसाब से लाइट का क्राउन, दूसरा सेवा का ताज।
C. ☑ बाप का दिलतख्त
D. ☑ स्वदर्शन चक्र
E. ☐ राज्य-तिलक

Explanation: राज्य तिलक स्वर्ग में होता है।

Q.2) **Q .मुरली के अनुसार पहला रूहानी अलंकार अर्थात "<u>छत्रछाया</u>" की जो विशेषताएं देखीं, उनका चयन करें ---**

A. ☑ छत्रछाया के नीचे रहने से, बच्चे प्रकृति और माया के वार से बचे हुए थे।
B. ☑ जरा सा सूक्ष्म वायब्रेशन भी छत्रछाया के अन्दर पहुँच नहीं सकता।
C. ☑ निरन्तर याद में रहने वालों की इतनी बड़ी बेहद की छत्रछाया थी कि उसी के अन्दर रह सारे विश्व का भ्रमण कर सकते थे।
D. ☑ यथा-शक्ति, नियम प्रमाण बेहद की याद को भी हद में लाने वालों की हद की छत्रछाया थी।
E. ☑ छत्रछाया में नम्बरवार होने के कारण माया के वायब्रेशन, वायुमण्डल, व्यक्ति-वैभव, स्वभाव-संस्कार वार करते हैं।

Q.3) **Q.मुरली के अनुसार दूसरा रूहानी अलंकार अर्थात "<u>डबल-ताज</u>" की जो विशेषताएं देखीं,उनका सही-सही चयन करें--**

A. ☑ डबल ताज अर्थात एक सम्पूर्ण प्युरिटी के हिसाब से लाइट का क्राउन, दूसरा सेवा का ताज। इसमें नम्बरवार थे।
B. ☑ संकल्प, बोल और कर्म की प्युरिटी के अनुसार लाइट का क्राउन चारों ओर नम्बरवार अपना प्रकाश फैला रहा था। फैलाव में अन्तर था।
C. ☑ साथ-साथ सेवा की जिम्मेवारी के अनुसार लाइट की पावर में अर्थात् परसेन्टेज में फर्क था।
D. ☐ रत्न जडित ताज भी बहुत सुन्दर लग रहा था।

Explanation: रत्न जडित ताज संगम पर नहीं होता है।

Q.4) **Q. मुरली के अनुसार तीसरा रूहानी अलंकार अर्थात "<u>बाप के दिलतख्तनशीन</u>" की विशेषताएं चयन करें --**

A. ☑ बाप का दिलतख्त इतना प्योर है जो इस तख्त पर सदा बैठ भी वही सकते जो सदा प्योर हैं।
B. ☑ संकल्प में भी अपवित्रता वा अमर्यादा आ जाती है तो तख्तनशीन की बजाए गिरती कला में अर्थात् नीचे आ जाते हैं।
C. ☑ कोई व्यर्थ कर्म हो जाता है तो महसूसता की स्टेज होती है कि यह करना नहीं चाहिए। यह रॉंग है और यह काँटे के समान चुभता रहता।
D. ☑ अगर ज्यादा उल्टा कर्म [विकर्म] होता है तो पश्चाताप की स्थिति में आ जाते हैं कि तख्तनशीन से गिरती कला में आ गये।
E. ☑ जहाँ पश्चाताप की स्थिति अथवा महसूसता की स्टेज अनुभव होगी वहाँ तख्तनशीन के नशे की स्टेज नहीं होगी।

Q.5) **Q." तीसरे अलंकार में फर्स्ट स्टेज है - तख्त नशीन। सेकेण्ड स्टेज है -महसूसता की स्टेज। इसमें भी नम्बर है। कोई करने के बाद महसूस करते हैं। कोई करते समय ही महसूस करते हैं और कोई कर्म होने के पहले ही कैच कर समाप्त कर देते हैं। तीसरी स्टेज है - पश्चाताप की। इसमें भी नम्बर हैं - कोई पश्चाताप के साथ परिवर्तन कर लेते हैं और कई पश्चाताप करते हैं लेकिन परिवर्तन नहीं कर पाते क्योंकि परिवर्तन की शक्ति नहीं है । इसके लिए स्वयं के प्रति शुद्ध व दृढ़ संकल्प रूपी व्रत और नियम बनाना चाहिए।"**

A. ◉ True
B. ○ False

Q.6) **Q. मुरली के अनुसार चौथा रूहानी अलंकार अर्थात "स्वदर्शन चक्र" की जो विशेषताएं देखीं,उनका सही-सही चयन करें --**

A. ☑ किसी बच्चे का स्वदर्शन चक्र स्वत: ही चल रहा था और कोई को चलाना पड़ता था ।
B. ☑ कोई फिर कभी-कभी राइट तरफ चलाने की बजाए रॉंग तरफ चला लेते थे अर्थात माया की चकरी में आ जाते थे ।
C. ☑ स्वदर्शन चक्र के बजाए पर-दर्शन चक्र चला लेते थे, मायाजीत बनने के बजाए पर के दर्शन के उलझन के चक्र में आ जाते थे ।
D. ☑ रॉग तरफ चलाने से 'क्यों' और 'क्या' के क्वेश्चन की जाल बन जाती, जो स्वयं ही रचते और फिर स्वयं ही फँस जाते ।
E. ☐ कोई-कोई स्वदर्शन चक्र को दूसरों के गले को काटने में यूज़ कर रहे थे ।

Explanation: स्वदर्शन चक्र दूसरों के गले काटने में यूज़ नही होता है ।

Q.7) **Q. बच्चों का अलंकारी श्रृंगार देखकर बापदादा द्वारा दी गयी डायरेक्शन पर आधारित यह मैचिंग एक्सरसाइज बहुत ध्यान से करें ---**

	Choice	Match
A	हद को छोड़ बेहद की छत्रछाया के अन्दर आ जाओ,	अर्थात् कभी-कभी की याद का अन्तर मिटाकर निरन्तर याद करो ।
B	प्युरिटी और सेवा के डबल ताज की परसेन्टेज बेहद में करो,	अर्थात् बेहद फैली हुई लाइट के ताजधारी बनो।
C	तख़्त से चढ़ने और उतरने में थक जायेंगे इसलिए,	सदा निर्बन्धन आत्मा के आराम की स्थिति में रहो।
D	नॉलेजफुल मास्टर हो सदा और स्वत:	स्वदर्शन चक्र फिराते रहो।
E	पर-दर्शन चक्र 'क्यों और क्या' के क्वेश्चन की जाल से सदा मुक्त हो जाओ,	तो योग-युक्त, जीवन मुक्त चक्रवर्ती बन बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा में चक्र लगाते रहेंगे।

Q.8) **Q. शब्दों / वाक्यों को उनके अर्थ अनुसार ही मिलाएं ----**

	Choice	Match
A	सहजयोगी का चित्र है- विष्णु की शेष-शैया,	अर्थात् विकारों रूपी सॉंप ही अधीन हो शैया बन गये तो निश्चिन्त हो गये ना।
B	माताओं ने भक्ति में बहुत झुलाया । अब भक्ति का फल है झूलना,	कभी सुख के झूले में, कभी शान्ति के झूले में, अनेक झूले हैं, ।
C	माताओं को देख करके बाप को भी खुशी होती है।	जिन्हें दुनिया ने ना उम्मींदवार बनाया, बाप ने उन्हें ही सिर का ताज बना दिया।
D	पाण्डवों का भी सदा सहयोगी और सदा साथ रहने का गायन है।	यादगार में देखो गोपी वल्लभ के साथ ग्वाल-बाल दिखाये हैं।
E	सभी याद और सेवा दोनों में तत्पर रहो।	सेवा से भविष्य प्रारब्ध बनेगी और याद से वर्तमान खुशी में रहेंगे।

Q.9) **Q. " कई बच्चे बड़ी होशियारी से बाप से रूह-रूहान करते हैं। कहते हैं -बाबा, फलानी-फलानी बात में इतना तो परिवर्तन कर लिया है, बाकी थोड़ा-सा है, वह भी हो जायेगा। इतना थोड़ा तो होगा ही ना। लेने में नहीं कहते कि थोड़ा-थोड़ा दे दो। बाप कहते कि देने में भी इतने फराखदिल बनो। परिवर्तन करने की शक्ति फुल परसेंटेज से यूज़ करो।"**

A. ◉ True
B. ○ False

Q.10) **Q. वरदान एवं स्लोगन पर आधारित इस मैचिंग एक्सरसाइज को ध्यान से करें --**

	Choice	Match
A	यदि निमित्त बने हुए बच्चे इकॉनामी वाले नहीं हैं,	तो सेन्टर ठीक नहीं चलता।
B	संकल्प, बोल और शक्तियों में चेक करो कि	क्या-क्या एक्स्ट्रा खर्च किया।
C	जो सर्व खजानों की इकॉनामी का बजट बनाकर चलते हैं,	उन्हें ही महीन पुरुषार्थी कहा जाता है।

D	संकल्प, बोल, कर्म व ज्ञान की शक्तियां,	महीन पुरुषार्थी कभी व्यर्थ नहीं गवाँते।
E	स्नेह के खजाने से मालामाल बनकर	सबको स्नेह दो और स्नेह लो।